अहिच्छत्रः महाभारत काल की वैभव गाथा

अहिच्छत्र, भारतीय संस्कृति और कलात्मकता का अद्भुत उदाहरण है, जो अपने धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। यह शहर पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण होने के साथ ही भारत की प्राचीन संस्कृति, शिक्षा, शासन और कलात्मकता का भी ध्वज वाहक है। अहिच्छत्र का नाम 'अहि' (सर्प) और 'छत्र' (छाया) से मिलकर बना है। किवदंती है कि इस स्थान पर तप कर रहे एक ऋषि को एक सांप ने आकर छाया दी थी। इससे अहिच्छत्र नाम मिला। पुराणों और प्राचीन ग्रंथों में वर्णित अहिच्छत्र, कभी उत्तरी पांचाल की राजधानी था। यह वही पांचाल है, जिसकी राजकुमारी द्रौपदी का विवाह पांडवों से हुआ था। यहां खुदाई में विभिन्न कालों की सभ्यताओं के अवशेष मिले हैं, जिनमें मौर्य, शुंग, कुषाण, गुप्त और मुगल काल प्रमुख हैं। यहां मिले बर्तन, सिक्के, मूर्तियां, हथियार और दीवारों के अवशेष इस बात के प्रमाण हैं कि यह क्षेत्र कभी अत्यंत समृद्ध और उन्नत था।

प्रस्तुति: शिवांग पांडेय

पांचाल संग्रहालय में संरक्षित अहिच्छत्र की धरोहरें

रुहेलखंड विश्वविद्यालय में एक छोटे से हाल में 1985 में पांचाल संग्रहालय की नींव रखी गई थी। इस संग्रहालय में अहिच्छत्र की तमाम धरोहरें संरक्षित हैं। प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति विभाग के तहत संचालित डिजिटल पांचाल संग्रहालय का लोकार्पण 15 मई 2023 को राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने किया। इस संग्रहालय में तीन हजार साल पुरानी ऐतिहासिक मूर्तियां, पांडुलिपि, मिट्टी व धातु के बर्तन, कपड़े, शस्त्र, मुद्रा प्रयोगशाला आदि दुर्लभ सामग्री सुरक्षित हैं। खुदाई के दौरान मिला तीन हजार साल पुराना नर कंकाल खास है। इसके अलावा वस्त्र वीथिका, अभयपुर का प्राचीन स्थल, मृण्मूर्ति वीथिका, टेराकोटा गैलरी, फोटो गैलरी तथा साउंड एंड डिजिटल ऑडिटोरियम मौजूद है।

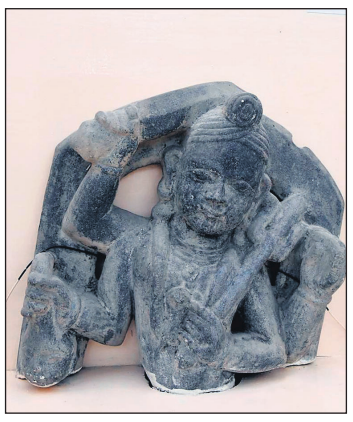

बौद्ध शिक्षा का था महत्वपूर्ण केंद्र

बुद्धकाल में अहिच्छत्र बौद्ध शिक्षा का महत्वपूर्ण केंद्र था। यहां प्राप्त बौद्ध मूर्तियां और विहारों के अवशेष संकेत देते हैं कि यह क्षेत्र बुद्ध धर्म के अनुयायियों के लिए प्रमुख स्थल रहा होगा। पुरातात्विक महत्व के कारण ही यह क्षेत्र पर्यटकों और शोधकर्ताओं के लिए आकर्षण का केंद्र है। बरेली की पहचान भले ही सुरमा, बांस और झुमकों के लिए होती हो, लेकिन यहां की समृद्ध संस्कृति अहिच्छत्र के ही इतिहास का एक पन्ना है।

जैन अनुयायियों का तीर्थ

जैन अनुश्रुतियों के अनुसार मान्यता है कि 23 वें जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ को अहिच्छत्र में कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई। यहां जैन अनुयायियों का भी बड़ा तीर्थ है।

यहीं हुआ था द्रौपदी का जन्म

महाभारतकाल में द्रुपद उत्तर पांचाल (अहिच्छत्र) एवं दक्षिण पांचाल (काम्पिल्य) दोनों के राजा थे। उनकी पुत्री द्रौपदी जो पांचाली कहलाईं, का जन्म अहिच्छत्र में हुआ था और विवाह काम्पिल्य में हुआ। महाभारत के अनुसार गुरु द्रोणाचार्य ने राजा द्रुपद को परास्त किया और आधे अहिच्छत्र के शासक बने। हालांकि उनका राज्य कौरव ही चलाते थे। द्रोणाचार्य तो हस्तिनापुर में ही रहे। कौरव-पांडवों का यहां अधिकार होने के कारण अहिच्छत्र का किला पांडवकालीन किला कहलाया।

उत्तरी व संयुक्त पांचाल की राजधानी

उत्तराखंड के नैनीताल जिले का दक्षिणी भाग, उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद, रामपुर, पीलीभीत, बरेली, बदायूं तथा शाहजहांपुर का पूर्वी भाग तथा गंगा पार के इटावा, मैनपुरी, फर्रुखाबाद एवं एटा का दक्षिण भाग प्राचीन काल में एक राज्य था, जो पांचाल नाम से विख्यात था। इसी की राजधानी अहिच्छत्र थी। प्राचीन ब्राह्मण ग्रंथों, जैन एवं बौद्ध जातकों में अहिच्छत्र एवं पांचाल के तमाम प्रसंगों का उल्लेख है।

वर्षों पुरानी सभ्यता

रुहेलखंड विश्वविद्यालय में इतिहास के प्रोफेसर विजय बहादुर यादव बताते हैं कि भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा की गई खुदाई में अहिच्छत्र में लगभग 5 हजार वर्ष पुरानी सभ्यता के प्रमाण मिले हैं। यहां मिली ईंटों की संरचना, दीवारें और मूर्तियां बताती हैं कि कभी यहां सुनियोजित नगर व्यवस्था थी। मिट्टी के बर्तन, तांबे के औजार और शिलालेख सिद्ध करते हैं कि अहिच्छत्र शिक्षा, व्यापार, कला और संस्कृति का बड़ा केंद्र था।

ख्याल, ठुमरी हो या गजल कुलय हैं गायकी में कुशल

कुलय पांडे डीपीएस, आजाद नगर, कानपुर में कक्षा 9 के छात्र हैं, लेकिन अभी से गायकी के उस्ताद हैं। अंतर विद्यालय संगीत प्रतियोगिता में लगातार दो साल प्रथम रहकर उन्होंने इसे साबित किया है। उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ द्वारा वर्ष 2022-23 में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में ठुमरी गायन में प्रथम स्थान तथा संगीत नाटक अकादमी की संभागीय शास्त्रीय संगीत प्रतियोगिता में ख्याल और ठुमरी दोनों के गायन में पहला स्थान मिला था।

-संत मिश्रा, लेखक

कुलय की माता रंजना पांडे गृहिणी और पिता संजीव पांडे सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। कुलय के दो भाई हैं, जुड़वा भाई कुशमित भारद्वाज और बड़ा भाई बड़ा द्विज भारद्वाज पांडे है। कुलय की संगीत की प्रारंभिक शिक्षा पहले बाल भवन फिर डॉ. मोनिका सिंह द्वारा हुई। वर्तमान में वह नाथवर्धन इंस्टीट्यूट ऑफ परफॉर्मिंग आर्ट में डॉ. सुषमा बाजपेई और रामबाबू भट्ट से नियमित संगीत की शिक्षा ले रहे हैं। कुलय की गान यात्रा आठ वर्ष पूर्व तब शुरू हुई थी, जब उन्हें केन्द्रीय विद्यालय में आयोजित अलंकरण समारोह में बाल अतिथि कलाकार के रूप में सम्मानित किया गया था। प्रयाग संगीत समिति, प्रयागराज की प्रतियोगिता में भजन व गजल में प्रथम तथा ख्याल में द्वितीय स्थान प्राप्त किया था। भारतखंडे संगीत विद्यापीठ, लखनऊ से विशारद पूर्ण कर चुके कुलय को लक्ष्मी देवी ललित कला अकादमी द्वारा अयोजित कानपुर के उभरते सितारे प्रतियोगिता में गजल, शास्त्रीय गायन व सिंथेसाइजर में प्रथम स्थान हासिल हुआ था। कथक केंद्र कानपुर की प्रतियोगिताओं में ध्रुपद गायन, ठुमरी, भजन एवं गजल में प्रथम स्थान पाया था। स्वर सर्जना, संगीतांजलि, आरोही की प्रतियोगिताओं में भी कुलय अपने हुनर से शीर्ष पर रहे थे।

शैलनट ने हल्द्वानी में जीवंत किया रंगमंच

रंगमंच से निकले निर्मल पांडे और हेमंत पांडे ने भले ही अपने दम पर पहाड़ को एक अलग पहचान दिलाई हो, लेकिन सुविधाओं व प्रोत्साहन के अभाव में हल्द्वानी का रंगमंच लगभग समाप्ति की ओर था। प्रतिभाएं और हुनर दम तोड़ रही थीं। ऐसे में प्रमुख नाट्य संस्था शैलनट ने उम्मीदों की अलख जगाई है। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय के सहयोग से हल्द्वानी में आयोजित एक माह की कार्यशाला में प्रतिभाओं को निखारने की कोशिश से उम्मीद है कि रंगमंच का आकर्षण फिर लौटेगा। हल्द्वानी में रंगमंच को कई थियेटर ग्रुपों ने ताकत दी, लोगों ने पसंद भी किया, लेकिन सुविधाओं के अभाव में सब दम तोड़ गए।

हरीश उप्रेती करन
लेखक

वरिष्ठ रंगकर्मी डॉ. डीएन भट्ट के अनुसार, हल्द्वानी में 1979 में भारतेंदु नाट्य अकादमी से पास आउट हरीश पांडे ने थियेटर ग्रुप की स्थापना की। 90 के दशक में रंगकर्मी अरविंद अग्रवाल ने अंबर कला विकास समिति का गठन किया। इसके बाद अस्तित्व, अनिल सनवाल का निहारिका और पर्वतीय कला केंद्र जैसे ग्रुप भी सामने आए। वर्ष 2001 में हल्द्वानी में वरिष्ठ रंगकर्मी व फिल्म कलाकार श्रीष डोभाल व डीएन भट्ट के प्रयासों से शैलनट की स्थापना हुई। इसकी प्रदेश भर में एक दर्जन से अधिक शाखाएं हैं। इस ग्रुप ने वर्ष 2002 में आयोजित चौथे अंतर्राष्ट्रीय भारत रंग महोत्सव में जगह बनाकर अपना झंडा बुलंद किया। इप्शन थियेटर फेस्टिवल काठमांडू में भी नाटकों का मंचन किया, लेकिन इसके बाद सन्नाटा सा खिंच गया। अब करीब 20 वर्ष बाद शैलनट के प्रयास से रंगमंचीय गतिविधियां फिर शुरू हुई हैं, लेकिन सुविधाओं का अभाव राह का रोड़ा है। शहर में एक अदद ऑडिटोरियम की कमी से एक स्कूल में कार्यशाला करनी पड़ रही है।

युगमंच ने दिए दो दर्जन से अधिक कलाकार

1976 में नैनीताल में स्थापित युगमंच ने दो दर्जन से अधिक ऐसे कलाकार दिए हैं, जिनका एनएसडी व एफटीआई पुणे में न केवल चयन हुआ, बल्कि उन्होंने बॉलीवुड में अपनी प्रतिभा का लोहा भी मनवाया। इनमें निर्मल पांडे, ललित तिवारी, गोपल दत्त व सुनीता रजवार आदि प्रमुख हैं।

ऑडिटोरियम बनने से प्रतिभाओं को होगा लाभ

शहर में ऑडिटोरियम बनने से एक स्थान पर सभी कलाकार उपस्थित होंगे। रंगमंच को अलग पहचान मिलेगी। कालाकार आवाज लगा रहे हैं कि कला को मरने न दें, क्योंकि रंगमंच सिर्फ अभिनय नहीं, समाज का आईना है।

पितृपक्ष में अजन्मी बेटियों का महातर्पण

गंगा तट पर कुरीतियों के खिलाफ शुरू हुए अनुष्ठान ने बदला रिवाज

गर्भ में जिनको मार दिया, उनके लिए लड़ेगा कौन,
गूंज रही अब तक कानों में गूंगी चीखें सुनेगा कौन।
हृदय मिला है मानव का तो जागो फिर यह उत्तर दो,
गर्भपात में मृत बच्चों का आखिर तर्पण करेगा कौन।

यही वह पंक्तियां हैं, जिन्होंने हर किसी को झकझोर कर धार्मिक और सामाजिक रूढ़वादिता के खिलाफ आवाज बुलंद करने की ऐसी ताकत दी कि आज महिलाएं घरों से निकल कर अपनी न सिर्फ अपनी अजन्मी बेटियों, बल्कि दिवंगत देहदानियों और बलिदानियों को भी पितृपक्ष पर जल देकर शांति प्रदान कर रही हैं।

युग दधीचि देहदान अभियान प्रमुख मनोज सेंगर और माधवी सेंगर लंबे समय से अजन्मी बेटियों के लिए महिलाओं द्वारा महातर्पण का अनूठा अभियान चला रहे हैं। वर्ष 2011 से महिला सशक्तिकरण के लिए लगातार संचालित इस अद्भुत कार्यक्रम में कानपुर की प्रतिष्ठित महिलाएं पितृ पक्ष में एक निर्धारित दिन गंगा किनारे स्थित सरसैया घाट पर एकत्र होकर विधिवत उन बेटियों के लिए तर्पण और पिंडदान करती हैं, जिन्हें पुत्र मोह के कारण समाज ने धरती पर आने ही नहीं दिया। इस अभियान के बारे में मनोज सेंगर बताते हैं कि वर्ष 2010 के नवंबर माह में जेके कॉलोनी, जाजमऊ में आयोजित विराट गायत्री महायज्ञ में एक हजार लोगों को सामूहिक कन्या भ्रूण हत्या रोकने की शपथ दिलाई गई, इसी दौरान एक महिला रोते हुए आई और बड़े संकोच से बताया कि उसने दो बार गर्भपात कराया है और गर्भ में ही मार दी गई बेटियों के लिए वह कोई पूजा पाठ भी नहीं करा सकी है। क्या शास्त्रों में ऐसा कोई विधान है कि उसकी अजन्मी बच्चियों को मोक्ष मिल सके। इस प्रश्न ने वहां उपस्थित लोगों को बुरी तरह झकझोर दिया। सभी उस महिला को तुरंत कोई जवाब नहीं दे सके। रात भर महिला का सवाल यक्ष प्रश्न बनकर परेशान करता रहा। इसी के बाद आचार्य श्रीराम शर्मा द्वारा लिखित कर्मकांड भास्कर पुस्तक का अध्ययन किया तो गर्भपात में मृत बच्चों के पिंडदान से संबंधित मंत्र मिला। उस समय तक समाज में मान्यता थी कि महिलाएं तर्पण नहीं करती हैं, लेकिन शास्त्रों में प्रमाण मिला कि माता सीता ने अपने ससुर राजा दशरथ का पिंडदान गया में फल्गु नदी के तट पर किया था। इसी के बाद हम लोगों ने तय किया कि महिलाएं ही अपनी अजन्मी बेटियों के लिए तर्पण करेंगी। रूढ़वादिता तोड़ने का यह फैसला आसान नहीं था, लेकिन निर्भीक होकर सार्वजनिक रूप से शहर की प्रमुख महिलाओं से इस कार्य में भाग लेने का आह्वान किया। नियत दिन पर तर्पण की तैयारी की। जब बड़ी संख्या में महिलाएं और बेटियां इस अनूठे आयोजन में भाग लेने पहुंची, तो आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा।

-मनोज त्रिपाठी, वरिष्ठ पत्रकार

अमर शहीदों को भी जल देने पहुंचते हैं लोग

वर्ष 2011 से हर साल पितृ पक्ष में यह आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष कार्यक्रम 14 सितंबर, रविवार को प्रातः 10 बजे सरसैया घाट पर होगा। धीरे-धीरे तर्पण का दायरा और बढ़ चुका है। अब अजन्मी बेटियों के साथ दिवंगत देहदानियों और अमर बलिदानियों के लिए भी तर्पण किया जाता है। इस आयोजन के साक्षी सांसद, विधायक, व्यापारी, चिकित्सक, अधिवक्ता और समाजसेवी आदि भी बनते हैं।

शास्त्रों में वर्णित हैं महिलाओं को कर्मकांड के अधिकार

यह केवल एक भ्रांति है कि महिलाएं तर्पण और पिंडदान नहीं कर सकती हैं। शास्त्रों में महिलाओं को संपूर्ण कर्मकांड के अधिकार दिए गए हैं। गायत्री परिवार की कर्मकांड भास्कर पुस्तक में गर्भपात में मृत बच्चों को जलदान का मंत्र दिया गया है। कर्मकांड मंजूषा में भी इस बारे में विस्तार से लिखा गया है। गार्गी, घोषा, अपाला, सुलभा, कात्यायनी, मैत्रेई आदि ऋषिकाओं ने समस्त वैदिक कर्मकांड अधिकार पूर्वक किए और कराए हैं।

माता सीता ने किया था राजा दशरथ का तर्पण और पिंडदान

महातर्पण का आयोजन करने वाले मनोज सेंगर और माधवी सेंगर का कहना है कि शास्त्रों में कहीं भी नहीं लिखा कि महिलाएं तर्पण नहीं कर सकती हैं। माता सीता द्वारा अपने ससुर महाराज दशरथ का पिंडदान और तर्पण गया में फल्गु नदी के तट पर किया गया था, जिसे विद्वानों ने उचित ठहराया था। उस समय भारत में महिलाओं की बड़ी प्रतिष्ठा और मान्यता थी, लेकिन बीच में आए अंधकार पूर्ण युग में महिलाओं के तमाम सामाजिक और धार्मिक अधिकार विस्मृत कर दिए गए। गतिविधियां सीमित कर दी गईं, इससे उनका आत्मविश्वास कमजोर हो गया। महिलाओं में आत्मविश्वास जगाकर अधिकारों के प्रति जागृत करके उन्हें सशक्त बनाने से ही सशक्त राष्ट्र का निर्माण होगा।